साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

सरल मनुष्य अर्थात् आधा साधु!

लेखक: डॉ.पद्मश्री गुणवंतभाई शाह

अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह

जैसे जैसे पाप के रुपये बढ़ते जाते हैं, वैसे वैसे मनुष्य का मन छिछली धार्मिकता की ओर बढ़ते रहने का मन करता है। बाद में गुरुघंटाल की शरण पकड़ता है।

कोई यदि हमारी बात नहीं मानता है तो इससे क्या फर्क पड़ता है? जो सरकारी कर्मचारी अपने जीवनकाल में एक भी रुपये की रिश्वत लिए बिना लोगों का काम करता हो,उसे बदरी-केदार या मक्का या यरूसलम की यात्रा करने की कोई जरूरत नहीं है। प्रामाणिक कमाई ही सच्ची यात्रा। उस व्यक्ति को गीता,कुरान और बाइबल कंठस्थ करने की भी जरूरत नहीं है। हराम की केलेरी और हराम की सेलरी से बचकर जीनेवाले मनुष्य को संसार छोड़ने की भी जरूरत नहीं है। ऐसा सज्जन संसारी ही देश की सच्ची परिसंपत्ति(अमानत) है।

आजकल अनेक लोग वजन कम करने के लिए जिम में जाते हैं। जिम कभी भी सस्ता नहीं होता और उसमें जानेवाले लोग गरीब नहीं होते। आजकल लोग रात को आठ-नौ-दस बजे के बाद डिनर लेना शुरू करते हैं। यह एक ऐसा अनिष्ट है,जो महंगे होटेलों में रिवाज बनकर अड़ गया है। बाबा रामदेव के शिष्य का संवाद किसी कोन्क्लेव में रखा गया था। वहाँ बैठे सुख सम्पन्न सद्गृहस्थों ने प्रश्न पूछा : `वजन कम करने का क्या कोई उपाय है? उत्तर में बाबा रामदेव के शिष्य ने कहा: `सात या आठ बजने के बाद खाना टाल दीजिये और सुबह उठने के बाद कुनकुना पानी

पीजिए।' ऐसी सलाह मुफ्त में मिले तो आसानी से पचती नहीं है,परंतु यदि कोई डाएटीशियन रुपिया 1000 फीस लेकर सलाह दे तो तुरंत पच जाती है। आज का अकर्मण्य(आलसी) सुखी गृहस्थ तेल में तले हुए आलुबड़े खाते समय यह नहीं सोचता है,कि ये स्वादिष्ट आलुबड़े जठर में पहुँचकर वजन नहीं बढ़ाएगा तो और क्या बढ़ाएगा? बड़ी तोंदवाले,कोई मलावरोधी मुखरजी या ब्लडप्रेशरकुमार बनारसीलाल लिफ्ट छोडकर सीधा अपनी कार में बैठ जाता है। उसके पेट को देखें तो उस पेट का घेरा सातवाँ महिना चल रहा हो,ऐसी सगर्भा स्त्री जैसा दिखेगा। ऐसे पेटू लोगों की तादाद बढ़ती जा रही है। वे सुखी गिने जाते हैं और दिखते भी हैं। ऐसे सुखसम्पन्न लोगों का प्रिय रोग है-डायबिटीज़। लगे रहो मुन्नाभाई! गृहिणियों के शरीर पर जो मेद जमता है,वह रोग की प्रस्तावना को तैयार करता है। सुखी गृहिणी अर्थात् पिपास्वरूपा ऐसी मोटी और वजनदार स्त्री। वह एक किलोमीटर भी चलना नहीं चाहती। बस,खाते रहना और सोते रहना! सुबह नाश्ते में गरमागरम कचौड़ी और दुपहरिया में पेटिस! जो केलेरी पेट में डाली गई, वह कमर पर फुट आई! आजकल लोगों पर फास्टफूड का पागलपन सवार है। फटाफट खाओ और फटाफट जाओ। जानने जैसा है,कि फ्रांस,नॉर्वे,जापान,मेक्सिको जैसे अनेक देशों में शक्कर और चर्बी की ऊंची मात्रावाले व्यंजनों पर अधिक कर डाले गए हैं। ऑस्ट्रेलिया में भी ऐसी विष से भरे व्यंजनों में 20 प्रतिशत शक्कर कम करने के कानून पर विचार किया जा रहा है। ऐसा ही जहरीले पेयों के बारे में भी विचार करना चाहिए। ऐसे पेय भी ज्यादा जोखिमी पाये गए हैं। हमारी थाली का रोज ओडिट होना चाहिए। थाली में रोज आग्रह करके हृदयरोग परोसा जाता है।

हराम की कमाई बहुत खटमीठी लगती है। तनख्वाह गौण हो जाती है और पिछले दरवाजे से प्रविष्ट होता दो नंबरिया पैसा परिवार में पापोवृद्धि करता रहता है। जैसे जैसे पाप के रुपये बढ़ते जाते हैं,वैसे वैसे मनुष्य का मन छिछली धार्मिकता की ओर बढ़ते रहने के लिए लालायित रहता है। बाद में गुरुघंटाल की शरण पकड़ता है। वह पूजा में बैठता है,मंदिर जाता है और एक गुरु घंटाल की शरण में जाता है। ऐसी खोखली धार्मिकता के कारण उसकी पापग्रंथि का उत्पात नियंत्रित रहता है। उत्तर गुजरात में चंदुभाई नामक एक ग्रामीण सीधे-सादे व्यक्ति थे। उन्होंने घर किराए पर लिया था। जब वे बीमार हुए तब अस्पताल में मालिक मकान ने जाकर कहा:

`चंदुभाई ! जब आप घर खाली करके मुझे सौंप देंगे तब आपको दी जानेवाली राशि के लिए अवश्य समझ-विचार कर लेंगे।' मालिक मकान की बात चंदुभाई की समझ में नहीं आयी। मैं घर खाली करके दूँ,क्या उसमें पैसे मिलते हैं?' बेटे ने बाप को मूर्ख समझकर कहा:`वह आदमी सामने चलकर देने की बात कर रहा है और तुम हैरत अनुभव कर रहे हो। आप कैसे आदमी हैं? चंदुभाई ने मालिक मकान से पैसे नहीं लिए तो नहीं लिए। कहो,चंदुभाई जैसे सीधे सादे आदमी के लिए यात्राधाम जाने की क्या कोई आवश्यकता है? यह है गांधीयुग का नया अध्यात्म! रथयात्रा या कुंभमेले की भीड़ पर से धर्म का मूल्यांकन नहीं हो सकता।

अलमारी में पचास साड़ियाँ हेंगर पर लटक रही हों,तब भी नयी साड़ी लाने के लिए ढेर सारे अज्ञान की जरूरत रहती है,परंतु गरीब कामवाली को एक साड़ी भेंट देने के लिए जरा से विवेक की ही आवश्यकता रहती है। देवरानी और जेठानी के बीच जो शीतयुद्ध चलता है,उसमें कभी नही गँवाने की स्पर्द्धा नहीं चलती। अन्य के लिए कुछ कर गुजरने के लिए जो साहस चाहिए,यदि वह नहीं हो तो व्यक्ति की पर्सनालिटी विकसित नहीं होती। अन्यथा पर्सनालिटी खिल उठने पर जो खुशबू प्रकट होगी वह उस पुष्प के कुल की होती है। लोग उसे चारित्र की महक कहते हैं। ऐसी दिव्य महक के स्वामी थे पूज्य रविशंकर महाराज। पूरे छह महीनों तक उनके साथ गाँवों में पदयात्रा करने का मौका मिला था। मैंने पूज्य महाराज को गांधीजी के चश्मे से नहीं देखा,परंतु पूज्य महाराज के चश्मे से दूर से गांधीजी को देखा है। परिणामस्वरूप गांधीजी को नहीं देख पाने का अफसोस नहींन रहा!

प्रभु की प्रार्थना करने का उत्तम ढंग क्या है? उसका हृदयभीना आभार मानना,यही उत्तम प्रार्थना मानी जानी चाहिए। आप कितनी बार मरते मरते बचे हैं,क्या उसका हिसाब संभव है? आप हाइवे पर अपनी कार से अहमदाबाद से सूरत या जामनगर पहुँचते हैं,तब तक कम से कम एकाध हजार बार बच गए! प्रत्येक मिनट गमख्वार दुर्घटना हो गई होती। भगवान विष्णु का एक नाम है:`अनुकूल।' यदि भगवान अनुकूल न हो तो आप विमान से अहमदाबाद से अमरिका निर्विघ्न नहीं जा सकेंगे। ऐसी हजारों-लाखों अनुकूलताएँ कार देनेवाले का आभार मानने में रही प्रार्थना के लिए मंत्र है: `अनुकूल: शतावर्त:!'

समझदारी
मैं छिपाना जानता तो,
जग मुझे साधु समझता!
शत्रु मेरा बन गया है,
छलरहित व्यवहार मेरा!
डॉ.हरिवंशराय बच्चन

------००------

संपर्क: २-`शील-प्रिय'; विमलनगर सोसायटी,नवाबजार, करजण। जिला: वडोदरा.गुजरात.पिनकोड: ३९१२४०.

मोबाइल: ९९२४५६७५१२. E.Mail id: navkar1947@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें